नागार्जुन का काव्य की अंतर्वस्तु

डॉ. उषा शर्मा

व्याख्याता-हिंदी साहित्य
राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमंद

महान कवि काल की सीमाओं में बंधते नहीं बल्कि उन सीमाओं का वह अतिक्रमण कर विस्तार करते हैं। वे शाश्वत और सार्वभौम शक्तियों का सौंदर्यमय तथा यथार्थ व्याख्यान करते हैं। यही कारण है कि देशकाल और परिवेश के बंधनों को तोड़ता हुआ उनका काव्य कालजयी बन जाता है और वह कवि भी काव्य जगत में कालजयी बन जाता है। जो कवि अपने युग की पीड़ा, समस्या, परिस्थिति एवं परिवेश का अनुभव करके उसे अपनी सृजनात्मक शक्ति के द्वारा अभिव्यक्ति नहीं दे सकता, वह भुला दिया जाता है। देश की सीमा पर तैनात जवान जिस तरह देश पर आने वाली हर समस्या तथा कठिनाइयों का डटकर मुकाबला करने के लिए अपनी पैनी दृष्टि द्वारा सजक खड़ा रहता है, ठीक उसी तरह कालजयी रचनाकार समाज में घटित होने वाली हर घटनाओं के प्रति युग सापेक्ष दृष्टि का निर्वाह करते हुए उसकी रचनात्मक अभिव्यक्ति कर देता है। तभी वह अमृत प्राप्त करता है।

नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य-परंपरा ही जीवंत रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। उनका कवि-व्यक्तित्व कालिदास और विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना-संसार के गहन अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में नूतन परंपरा के ध्वजवाहक वैद्यनाथ मिश्र उर्फ बाबा नागार्जुन ने प्रगतिशील चेतना के वाहक का विरोध करते हुए श्रमिक, शोषित, पीड़ित और उपेक्षितों के संघर्षशील जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति बड़ी आत्मीयता के साथ ही व्यक्त की है। यह अभिव्यक्ति इतनी रागात्मक, तीव्र और रोचक बन जाती है कि उन्हें आज आधुनिक कबीर के रूप में जाना जाता है।

समकालीन प्रमुख हिंदी साहित्यकार उदय प्रकाश के अनुसार "यह जोर देकर कहने की ज़रूरत है कि बाबा नागार्जुन बीसवीं सदी की हिंदी कविता के सिर्फ 'भदेस' और मात्र विद्रोही मिजाज के कवि ही नहीं, वे हिंदी भाषा के सबसे अद्वितीय मौलिक बौद्धिक कवि थे। वे सिर्फ 'एजिट पोएट' नहीं, पारंपरिक भारतीय काव्य परंपरा के विरल 'अभिजात' और 'एलीट पोएट' भी थे।"[1] उदय प्रकाश ने बाबा नागार्जुन के व्यक्तित्व-निर्माण एवं कृतित्व की व्यापक महत्ता को एक साथ संकेतित करते हुए एक ही महावाक्य में लिखा है कि "खुद ही विचार करिये, जिस कवि ने बौद्ध दर्शन और मार्क्सवाद का गहन अध्ययन किया हो, राहुल सांकृत्यायन और आनंद कौसल्यायन जैसी प्रचंड मेधाओं का साथी रहा हो, जिसने प्राचीन भारतीय चिंतन परंपरा का ज्ञान पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और संस्कृत जैसी भाषाओं में महारत हासिल करके प्राप्त किया हो, जिस कवि ने हिंदी, मैथिली, बंगला और संस्कृत में लगभग एक जैसा वाग्वैदग्ध्य अर्जित किया हो, अपनी मूल प्रज्ञा और संज्ञान में जो तुलसी और कबीर की महान संत परंपरा के निकटस्थ हो, जिस रचनाकार ने 'बलचनमा' और 'वरुण के बेटे' जैसे उपन्यासों के द्वारा हिंदी में आंचलिक उपन्यास लेखन की नींव रखी हो, जिसके चलते हिंदी कथा साहित्य को रेणु जैसी ऐतिहासिक प्रतिभा प्राप्त हुई हो, जिस कवि ने अपने आक्रांत निजी जीवन ही नहीं बल्कि अपने समूचे दिक् और काल की, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों और व्यक्तित्व पर अपनी निर्भ्रांत कलम चलाई हो, (संस्कृत में) बीसवीं सदी के किसी आधुनिक राजनीतिक व्यक्तित्व (लेनिन) पर समूचा खण्डकाव्य रच डाला हो, जिसके हैंडलूम के सस्ते झोले में मेघदूतम् और एकोनमिक पालिटिकल वीकली एक साथ रखे मिलते हों, जिसकी अंग्रेजी भी किसी समकालीन हिंदी कवि या आलोचक से बेहतर ही रही हो, जिसने रजनी पाम दत्त, नेहरू,

बर्तोल्त ब्रेख्ट, निराला, लूशुन से लेकर विनोबा, मोरारजी, जेपी, लोहिया, एलिजाबेथ, आइजन हावर आदि पर स्मरणीय और अत्यंत लोकप्रिय कविताएं लिखी है -... बीसवीं सदी की हिंदी कविता का प्रतिनिधि बौद्धिक कवि वह है...।"[2]

उन्हें न कहीं खाली ब्रेन, न खाली दिमाग नजर आता है, उन्हें सिर्फ भूख से बेहाल खाली पेट और खाली हाथ ही नजर आते हैं। जिनके सामने खाली-थाली और खाली प्लेट के सिवा कुछ भी नहीं है। इसी कारण विशंभर मानव लिखते हैं कि "भारतेंदु युग के कुछ साहित्यकारों को छोड़कर नागार्जुन जैसी तीखी और सीधी चोट करने वाले व्यंगकार हमारे साहित्य में नहीं हुए।"[3]

निराला के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं जिन्होंने इतने छन्द, इतने ढंग, इतनी शैलियों और इतने काव्य रूपों का इस्तेमाल किया है।

प्रेत का बयान कविता में 30 रुपया तनख्वाह वाले अध्यापक को समय पर तनख्वाह न मिलने पर मौत को गले लगा लेना इस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है।

"सुनकर दहाड़

स्वाधीन भारतीय प्राइमरी स्कूल के

भुखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षित प्रेत की

रह गए निरुत्तर

महामहिम नागेश्वर"[4]

इसी प्रकार 'अकाल और उसके बाद' कविता में नेताओं के कागजी घोड़े से त्रस्त और अकाल से पीड़ित किसान के घर का चित्र है

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,

कई दिनों तक काली कुतिया सोई उसके पास"।[5]

आज हम कंप्यूटर युग में जी रहे हैं, फिर भी समाज में प्रचलित रूढ़ियाँ- प्रथा- परम्पराओं, अंधविश्वास और धर्मान्धता को पूरी तरह से समाज से निकल नहीं पाए। धर्म के ठेकेदारों का बोलबाला आज भी है। कवि नागार्जुन के अनुसार

"कैसा शिव?

कैसी शिव-सेना?

कैसे शिव के बैल?

चौपाटी के सागर तट पर

नाच रहा है भस्मासुर बिगड़ैल"[6]

स्त्री जीवन की बेबस पीड़ा को भी उन्होंने कविता में स्वर दिया।बेमल और अनमेल विवाह पर भी वे लिख सके।नागार्जुन देश, धरती और जनता के कवि हैं। देश के लोगों के हर्ष, विषाद को उनकी आशाओं,आकांक्षाओं को उनके संघर्षों,सपनों को नागार्जुन ने कविता में गूंथा है।परिणामस्वरुप उनकी कविता इस देश की दैनंदिनी दशा से यहां के लोगों के बहुरंगी जीवन यथार्थ से परिचय करवाती है।साथ ही सापेक्ष दृष्टि द्वारा अपने युग के सच को वास्तविकता को प्रस्तुत करती है। युगीन यथार्थ और वर्तमान परिवेश से रूबरू होते हुए उनकी कविता अपनी अर्थवत्ता मूल्यवत्ता

और उपयोगिता सिद्ध करने में समर्थ रही है। इसीलिए वह अपनी अंतस चेतना में कल और आज के लिए चेतनावादी एवं प्रेरणादायी बनी रही।

नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य-परंपरा ही जीवंत रूप में उपस्थिति देखी जा सकती है। उनका कवि-व्यक्तित्व कालिदास और विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना-संसार के गहन अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित है। 'उनका 'यात्रीपन'भारतीय मानस एवं विषय-वस्तु को समग्र और सच्चे रूप में समझने का साधन रहा है। मैथिली, हिन्दी और संस्कृत के अलावा पालि, प्राकृत, बांग्ला, सिंहली, तिब्बती आदि अनेकानेक भाषाओं का ज्ञान भी उनके लिए इसी उद्देश्य में सहायक रहा है। उनका गतिशील, सक्रिय और प्रतिबद्ध सुदीर्घ जीवन उनके काव्य में जीवंत रूप से प्रतिध्वनित-प्रतिबिंबित है। नागार्जुन सही अर्थों में भारतीय मिट्टी से बने आधुनिकतम कवि हैं।'[7]

स्वाधीन भारत में जनमानस ने राम राज्य का सपना देखा था।हमारे देश की बागडोर हमारे अपने हाथों में होगी।सोचते थे कि आजादी बाद हमारे देश में कोई व्यक्ति कपड़ों की लाचारी में नंगा, अनाज के अभाव में भूखा और छत के अभाव में फुटपाथ पर नहीं सोएगा।परंतु भारत की नियति कैसे बदलगई,इस पीड़ा को नागार्जुन ने अभिव्यक्ति दी है-

"रामराज में अब की रावण नंगा होकर नाचा है।

सूरत शक्ल वही है भैया बदला केवल ढांचा है।।

नेताओं की नियति बदली फिर तो अपने ही हाथों।

भारत माता के गालों पर कसकर पड़ा तमाचा है।।

नागार्जुन अपनी कविताओं के माध्यम से नेताओं के दुमुंहेंपन और खोखले व्यवहार पर प्रहार करते हुए भयानक सामाजिक यथार्थ से साक्षात्कार करवाते हैं-

"देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी से,

मिलेना रोजी रोटी भटके दर-दर बने भिखारी से।"

कवि के युगीन यथार्थ आज की वास्तविकता है आंकड़ों के अनुसार आज भी बहुत सी जनता भूखे पेट सोती है और 20% गरीबों की रेखा से नीचे है, वही बेकारी का तांडव तो हर तरफ दिखाई देता है। इसी कारण कवि को ना कहीं खाली बस, ट्रेन खाली नजर आती है।

उनकी कविता में एक प्रमुख शैली स्वगत में मुक्त बातचीत की शैली है नागार्जुन की ही कविता से पद उधार ले तो कह सकते हैं 'स्वागत शोक में बीज निहित है विश्व व्यथा के।'[8]पारंपरिक काव्य रूपों को नए कथ्य के साथ इस्तेमाल करने और नए काव्य कौशलों को संभव करने वाले वह अद्वितीय कवि हैं उनके कुछ काव्य शिल्पो में उनकी अभिव्यक्ति का ढंग तिर्यक भी है, बेहद ठेठ और सीधा भी।

'उन्होंने आज़ादी के पहले और बाद में भी कई बड़े जनांदोलनों में भाग लिया था। 1939 से 1942 के बीच बिहार में किसानो के एक प्रदर्शन का नेतृत्व करने की वजह से जेल में रहे। आज़ादी के बाद लम्बे समय तक वो पत्रकारिता से भी जुड़े रहे।'[9]

अंततोगत्वा कहा जा सकता है कि कवि नागार्जुन ने अपने युग की पीड़ाओं, समस्याओं, परिस्थिति एवं परिवेश का अनुभव करके उसे अपनी सृजनात्मक शक्ति द्वारा अभिव्यक्ति देकर हिंदी काव्य संसार की में कालजई कवि के

रूप में अमृत्व प्राप्त कर लिया है। नागार्जुन की कविता न केवल समसामयिक चेतना के प्रवाह की उपज है, वरन मानववादी चेतना का वह संस्करण है जो प्रगतिशीलता की महत्वपूर्ण कड़ी है। जब तक मनुष्य की संचेतना अपने आप को युग के संयुक्त रूप से देखती रहेगी तब तक नागार्जुन याद आते रहेंगे।

संदर्भ

1 ईश्वर की आंख उदय प्रकाश पृष्ठ संख्या 207

2 ईश्वर की आंख उदय प्रकाश पृष्ठ संख्या 208

3 विश्वंभर मानव- आलोचना पत्रिका से

4 प्रेत का बयान कविता से

5 'अकाल और उसके बाद' कविता से

6 भस्मांकुर -१९७०

7 लोक सरोकारों के कवि नागार्जुन सृजन शिल्पी 28 सितंबर 2007

8 नागार्जुन रचना संचयन भारतीय साहित्य संग्रह 18 दिसंबर 2008

9 बाबा नागार्जुन यात्री की कालजई रचनाकार विद्रोही कवि गए दरभंगा एक्सप्रेस,20 मई 2018